सम्पादकीय

डॉ. मीना शर्मा,

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य),
दिल्ली विश्वविद्यालय

हमारे दिन की शुरुआत चाय की चुस्की के साथ होती है। लेकिन चाय की चुस्की के साथ समाचार–पत्र (अखबार) हो तो, इससे अच्छी दिन की शुरुआत नहीं हो सकती है। दरअसल समाचार–पत्र चाय या कॉफी का आनन्द ज्यादा बढ़ा देते हैं। चाय शरीर की भूख मिटाती है और अखबार दिमाग की भूख को मिटाते हैं।

किसी भी समाचार–पत्र में कई पृष्ठ होते हैं जिनमें दुनियाँ जहान की अनेकों घटनाएँ होती हैं। लेकिन अखबार की शुरुआत प्रथम पृष्ठ से होती है। मुख्य घटनाएँ प्रथम पृष्ठ पर ही होती हैं। इन पर कभी गम्भीर और कभी सरसरी तौर पर पाठक की नजर आती है। लेकिन समाचार–पत्र का सबसे प्रमुख पृष्ठ 'सम्पादकीय पृष्ठ' ही होता है। यह पृष्ठ विचार प्रधान और समीक्षा प्रधान होता है। सम्पूर्ण पत्र का सार यही पृष्ठ होता है। डॉ. अरुण जैन लिखते हैं –

''समाचार–पत्र में समाचारों की दृष्टि से तो प्रथम पृष्ठ ही मुख्य होता है। किन्तु समाचारों पर विचार और समीक्षा की अपेक्षा से सम्पादकीय पृष्ठ का महत्व ही प्रधान माना जाएगा।''

एक समय ऐसा भी था जब समाचार–पत्र का पाठक सामान्य जानकारी पाकर ही सन्तोष कर लेता था। उस समय समाचार–पत्र घटनाओं सूचनाओं को साधारण तरीके से छापकर पाठकों तक सम्प्रेषित कर देते थे। पाठक को भी इससे अधिक की जरूरत महसूस नहीं होती थी। समय बदला। इस बदलाव के समय पाठग वर्ग और उसकी चेतना में भी बदलाव आया। इसका असर यह हुआ कि समाचार–पत्रों की जानकारी सम्प्रेषण की शैली भी बदली। आज के दौर में पाठक वर्ग की जानने की उत्कंठा इतनी अधिक बढ़ गई है कि सामान्य जानकारी से उसे सन्तुष्टि नहीं मिलती। आज के पाठक को समाचार का सम्पूर्ण विवरण उसकी सम्पूर्णता में चाहिए। कहने का आशय यह है कि समाचार से सम्बन्धित अन्य विवरण भी पाठक को चाहिए होते हैं ताकि वह घटना को सम्पूर्ण रूप में जान और समझ सकें। ऐसे में सम्पादकीय पृष्ठ की अनिवार्यता का अन्दाजा लगाना कठिन नहीं है। पाठक की सम्पूर्ण उत्सुकता को सम्पादकीय पृष्ठ ही शान्त कर सकता है।

'पाठकों के पत्र' भी सम्पादकीय पृष्ठ पर ही स्थान पाते हैं।

आज का पाठक बेवकूफ नहीं है कि उसे कुछ भी बता दिया जाए तो वह उसे यूँ ही स्वीकार कर ले। आज वह अतिरिक्त जागरूक है। अखबार में अनेकों ऐसी खबरें होती हैं जिन पर पाठक की अपनी निजी राय हो सकती है। वह किसी खबर से सहमत या असहमत हो कसता है। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप वह अपना मत समाचार–पत्र को भेज सकता है, अथवा भेजता है। ऐसे मतों के सम्पादकीय पृष्ठ पर ही छापा जाता है। इसके अलावा पाठक की अनेक शिकायतें भी होती हैं जिन्हें वह समाज तक पहुँचाना चाहता है। जैसे शहर की परिवहन व्यवस्था में कुछ गड़बड़ी हो, किसी अस्पताल, स्कूल आदि में उसके साथ दुर्व्यवहार हुआ हो,

शहर की सड़कों का हाल बुरा हो और प्रशासन का उस पर कोई ध्यान न हो तो इसका सबसे अच्छा उपाय समाचार–पत्र होते हैं जहाँ वह ऐसी शिकायतों को भेज सकता है। सम्पादकीय पृष्ठ पर उन्हें छापा जाता है।

हमारे देश में तीज–त्यौहारों, रीति–रिवाजों का बड़ा महत्व हैं। जहाँ अनेक जयन्तियाँ, मेले, उत्सव, धार्मिक और सामाजिक समारोह आदि होते हैं। इनसे सम्बन्धित लेखों को भी पूर्णता के साथ सम्पादकीय पृष्ठ पर छापा जाता है। इसके साथ–साथ व्यंग्य चित्र और कार्टून आदि को भी सम्पादकीय पृष्ठ पर ही छापा जाता है। व्यंग्यकार समाचार–पत्र का बहुत ही लोकप्रिय व्यक्ति माना जाता है। वह विशेष प्रतिभा का धनी होता है। वह बड़ी से बड़ी समस्या को और साथ ही बड़े से बड़े मसले को बहुत ही छोटे और सटीक ढंग से प्रस्तुत कर देता है। कई बार कोई तीखा व्यंग्य किसी व्यक्ति पर गहरी चोट कर देता है, लेकिन आहत हुआ व्यक्ति भी इस पर मुस्कराए बिना नहीं रहता। यह व्यंग्यकार की बड़ी विशेषता होती है। यह सब सम्पादकीय पृष्ठ पर होता है जिस पर विवेकशील और बुद्धिवान लोक सबसे ज्यादा फोकस करते हैं।

सम्पादकीय लेखन–अक्सर बड़े समाचार–पत्रों में सम्पादकीय लेख सम्पादक नहीं लिखते। यह लेखक सहायक सम्पादक करता है। इस रूप में सहायक का कार्य बड़ी जिम्मेदारी का होता है। सम्पादक तो सहायक सम्पादक को सम्पादकीय से सम्बन्धित विषय या मुद्दे को समझा देता है। सहायक सम्पादक उस विषय से सम्बन्धित समस्त सामग्री का अध्ययन करता है, सम्पादकीय लिखता है। इस सम्पादकीय को सम्पादक को दिखाया जाता है सम्पादक इसमें आवश्यक सुझाव और विचार देता है और उस लेख की त्रुटियों को दूर कर छपने के लिए भिजवा देता है।

सम्पादकीय लेखन कई प्रकार का हो सकता है। यह तथ्यात्मक भी हो सकता है और किसी गम्भीर मुद्दे के विश्लेषण से सम्बन्धित भी हो सकता है। सम्पादकीय हास्य–व्यंग्य से भरा भी हो सकता है। इसके माध्यम से यह अपने पाठकों को मनोरंजन करता है। डॉ. विनोद गोदरे लिखते हैं –

''सम्पादकीय लेख प्रायः दो खण्डों में विभाजित रहता है। पहले खंड में प्रतिपादन का संकेत रहता है तथा दूसरे खंड में उसका विश्लेषण–विवेचन होता है। कभी–कभी तीसरा खण्ड भी दिया जाता है। जिसमें सम्पादकीय प्रतिपादन के बारे में अपने निष्कर्ष या निर्देश देता है। इस लेखक की अपनी कोई विशिष्ट भाषा–शैली नहीं होती है।''

दरअसल सम्पादकीय लेखन सम्पादकीय पृष्ठ का सबसे अहम अंग होता है। इसका सीधा सम्बन्ध सम्पादक से होता है। वैसे तो सामान्य रूप से समाचार–पत्र (अखबार) में जो कुछ भी छपता है उसकी जिम्मेदारी प्रमुख रूप से सम्पादक पर होती है। लेकिन जहाँ तक सम्पादकीय लेख की बात होती है तो वह पूर्ण रूपेण सम्पादक और साथ ही समाचार–पत्र के विचारों का दर्पण होता है। ऊपर कहा गया है कि अक्सर समाचार–पत्रों के सम्पादकीय सहायक सम्पादक लिखते है जिनमें सम्पादक अपनी सलाह–मशविरा देते हैं। दरअसल सम्पादक के परामर्श के बिना सहायक सम्पादक सम्पादकीय लेख नहीं लिख सकते। इसका कारण यह होता है कि सहायक सम्पादक चाहे जो भी लिखें, उसकी सारी जिम्मेदारी समाचार–पत्र के सम्पादक की होती है। इसलिए सम्पादक की जानकारी के बाहर इस लेख में कुछ नहीं छप सकता। सम्पादकीय लेखन बड़ी जिम्मेदारी का होता है, अतः यह काम किसी नौसिखिए को नहीं दिया जाता है। इसके लिए किसी जानकार व्यक्ति को ही चुना जाता है, जिसकी प्रतिभा पर शक न किया जा सके। सम्पादकीय लेखक को चहुँमुखी प्रतिभा का धनी

होना आवश्यक होता है। उसे इतिहास, भूगोल, राजनीति आदि का समुचित ज्ञान होना आवश्यक होता है। उसे समाज की नब्ज का पता होना चाहिए। उसे विचारों की दुनियाँ में ही रहना होता है। अतः उसे पता होना चाहिए कि देश–दुनियाँ में क्या हो रहा है। किसी घटना का कैसा प्रभाव समाज पर पड़ रहा है, उसे पता होना चाहिए। वर्तमान युग टैक्नोलॉजी का युग है। ऐसे में उसे यह पता होना चाहिए कि मानव की दुर्बलताएँ क्या हैं, उसकी आकांक्षाएँ क्या हैं। कोई भी समाचार, घअना आदि व्यक्ति को किस रूप में प्रभावित कर रही हैं, उसे उसका भान होना चाहिए। कहने का आशय यह है कि सम्पादकीय लेखक को कोरा ज्ञान होना ही काफी नहीं होता उसके लिए अपेक्षित होता है कि वह संवेदनशील भी हो और बुद्धिमान भी। तभी वह समाज और देश का मार्गदर्शन कर सकता है। दरअसल सम्पादकीय लेख का प्रमुख कार्य होता है पाठक वर्ग को विचार करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करना। अतः सम्पादक को यह कार्य बड़ी जिम्मेदारी ओर सावधानी के साथ करना चाहिए। किसी भी वर्ग, दल अथवा सम्प्रदाय विशेष का समर्थन करना या विरोध करना सम्पादक के लिए सर्वथा अनुचित होता है। उसे तटस्थ भाव से, अपने ज्ञान और विवेक के आधार पर सम्पादकीय लिखना चाहिए। किसी पूर्वाग्रह के चलते किसी की भावनाओं को चोट न पहुँचे, इस बात का सम्पादकीय लेखक को विशेष तौर पर ध्यान रखना चाहिए।

सन्दर्भ

1. डॉ. अरुण जैन, पत्रकारिता और पत्रकारिता, पृ. 171, हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण–2003.
2. डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, सं. 2000, हिन्दी पत्रकारिता : स्वरूप एवं सन्दर्भ, पृ. 114.

Copyright © 2017, Dr. Meena Sharma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.